हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन ने मुझे कहा कि मेरे पिता ने मुझसे कहा कि एक गंदी फिल्म बस्ती में लगी है, वहां मत जाना देखने, क्योंकि उसमें तुम ऐसी चीजें देखोगे जो न देखते तो अच्छा था। मुल्ला को पता भी नहीं था कि कोई ऐसी फिल्म लगी है। अब जब बाप ऐसा कहे, तो जाना ही पड़ा। तो मुल्ला से मैंने पूछा कि फिर तुम्हें ऐसी चीजें दिखाई पड़ी उसमें, जो अच्छा होता कि तुम न देखते? उसने कहा कि हां, क्योंकि मेरे पिताजी भी वहां थे। वे मुझे दिखाई पड़े। उन्होंने मुझे देख लिया, मैंने उन्हें देख लिया; बात साफ हो गई कि ऐसी चीजें दिखाई पड़ीं, मुझको भी और उनको भी, जो दिखाई नहीं पड़नी थीं। उस दिन से न तो उन्होंने कुछ कहा है, न मैंने कुछ कहा है। अब हम चुप्पी साधे हुए हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी सुबह ही सुबह चाय की टेबल पर ही उलझ पड़े। वहीं से शुरू होता है रोज पुराण। चाय की टेबल से ही शुरू हो जाता है।

मुल्ला नसरुद्दीन कहने लगा कि मैं भी कहां की झंझट में पड़ गया! तुझसे विवाह करके किस उपद्रव को मैंने अपने सिर ले लिया!

पत्नी ने कहा कि मैं तुम्हारी पीछे न पड़ी थी। तुम्हीं पूंछ हिलाते मेरे पीछे घूमते थे। तुम्हीं मेरे पापा के हाथ-पैर जोड़ते थे, मेरी मम्मी को चढ़ोत्तरी चढ़ाते थे। तुम्हीं लिखते थे लंबे-लंबे प्रेम-पत्र। मैंने अभी भी संदूक में सम्हाल कर रखे हैं। कहो तो निकाल लाऊं? क्या-क्या तुमने लिखा है—कि हे प्राण प्यारी, तेरे बिना मर जाऊंगा, जी न सकूंगा, एक क्षण न रह सकूंगा। भूल गए वे सब बातें? मैं तुम्हारे पीछे नहीं पड़ी थी।

नसरुद्दीन ने कहा, यह बात सच है। कोई भी चूहादानी किसी चूहे के पीछे नहीं पड़ती। मगर ये मूरख चूहे खुद ही चले जाते हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने एक मित्र से कह रहा था...। बड़ा खुश था और छाती फुलाए बैठा था। तो मित्र ने पूछा कि बड़े खुश हो, बड़ी छाती फुलाए बैठे हो, मामला क्या है? उसने कहा : आज मैंने पत्नी को ऐसी घुड़की दी! बस समझों चारों खाने चित्त कर दिया एक घुड़की में! मित्र ने पूछा कि भरोसा नहीं आता, क्योंकि तुम्हारी पत्नी को हम जानते हैं और तुम्हें भी जानते हैं। हमें वह दिन भी याद है जब पत्नी तुम्हारा पीछा की थी और तुम घबरा कर बिस्तर के नीचे छुप गए थे। पत्नी मोटी है और तगड़ी है, तो बिस्तर के नीचे तो आ नहीं सकती। तो वही एक बचाव की जगह है। और इसी बीच मेहमानों ने कुछ द्वार पर दस्तक दे दी थी। तो पत्नी हाथ जोड़ने लगी थी कि बाहर आ जाओ। अब मेहमान देखेंगे तो क्या कहेंगे! तो हमें वह दिन याद है कि तुमने कहा था कि नहीं आते, आज पता ही चल जाए दुनिया को कि इस घर का मालिक कौन है! जहां बैठना है वहां बैठेंगे! घर का मालिक कौन है, आज यह तय ही हो जाए! मेहमानों के सामने ही तय हो जाए, ताकि दुनिया को भी पता चल जाए कि घर का मालिक कौन है!

तो मित्र ने कहा : हम मान नहीं सकते कि तुम्हारी घुड़की से...

लेकिन मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा कि मानो। बड़ी बकवास लगा रखी थी उसने। खोपड़ी खाए जा रही थी। मैंने कहा : बस, एक शब्द और बोल कि सिर खोल दूंगा! कि एकदम रास्ते पर आ गई।

मित्र ने कहा : फिर क्या हुआ?

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा : फिर क्या हुआ, एक शब्द नहीं बोल सकी। बोली : अरे जा-जा! तीन शब्द बोली। एक घुड़की में रास्ते पर ला दिया। एक शब्द बोलती तो मजा चखा देता। डर के मारे तीन शब्द बोली कि अरे, जा-जा।

डेढ़ साल अफ्रीका में रहने के बाद चंदूलाल जब भारत वापस लौटे तो मित्र-मंडली उनके संस्मरण सुनने को इकट्ठी हो गई। चंदूलाल ने अपने शिकार के अनुभव सुनाए, फिर जंगली जीवन की जानकारी देने लगे : अफ्रीका में एक ऐसा जानवर पाया जाता है कि जब नर अपनी मादा को बुलाना चाहता है तो एक विशेष प्रकार की आवाज में चिंघाड़ता है। उस आवाज को सुनकर मादा जहां कहीं भी हो फौरन चली आती है।

मित्रों ने आग्रह किया कि जरा हमें आवाज करके तो दिखाइए। ऐसी कौन सी आवाज है?

चंदूलाल ने मुंह खोल कर उसी आवाज में चिंघाड़ निकाली, ताकि मित्र-मंडली उस आवाज से पूरी तरह परिचित हो जाए। इतने में ही पास वाले कमरे का दरवाजा खुला और उनकी पत्नी ने पूछा, कहिए, क्या बात है?

— (ओशो पुस्तकों से संकलित)